किस्सा आज का

मृदुला गर्ग

क़िस्सा आज का

कहानी

मृदुला गर्ग

एक सफल पुरुष है (राजा नहीं)। तराशी हुई पत्नी के साथ रहता है (पत्नी सुन्दर है या नहीं, कोई नहीं जानता)। तराश इतनी बा-कशिश है कि नज़र पीछे या भीतर नहीं जा पाती। शहर की शानदार बस्ती में, उम्दा बँगले में रहता है (महल में नहीं)। राजा निरबंसिया नहीं है। एक सज़ा-सँवरा लड़का भी है (सुन्दर ? आजकल सौन्दर्य की कौन बात करता है, साहब)। लो कह डाला। क़िस्सा आज का है। गुज़रे वक़्त और आज में यही तो फ़र्क़ आया है। लफ़्ज़ बदल गये हैं। उनके मतलब वही हैं जो पहले थे।

सफल पुरुष की तराशी हुई पत्नी भी शादी से पहले सफल पुरुष थी। क्षमा करें, नारी मुक्तिवाहिनी, सफल पुरुष नहीं, सफल दफ़्तरी थी। मतलब एक ही है। पर हम ग़लती माने लेते हैं। सारा खेल शब्दों का है न। तो शादी से पहले पत्नी होने वाले पति से ज़्यादा कमाया करती थी। पदवी भी ऊँची थी। फिर भी शादी के बाद रानी बनने पर उसने दूसरों की नौकरी छोड़ दी। पति-घर-बच्चा तो था ही (वह तो हर औरत का होता है), पर सफल पुरुष की पूरक होने पर एक पूरा राज (समाज) हाथ आ जाता है, जिसकी सेहत का दारोमदार पूरी तरह दावतशाही पर रहता है। पति के साथ जाम से जाम मिला कर, तश्तरी भर- भर कर, उसकी ज़िम्मेवारियाँ निभानी पड़ती हैं। अरे बाबा, सीधा बोलो न। एक अमीर आदमी अपनी बीवी-बच्चे के साथ शहर के बढ़िया बँगले में रहता है। आगे ? हाँ, आगे। कहती हूँ। पर पहले मेरे मन में एक ख़याल आ रहा है उसे सुन लीजिए। यह क़िस्सा जो मैं सुनाने जा रही हूँ, क्या सौ-पचास साल बाद लोककथा की तरह सुनाया जा सकेगा ? जैसे गुज़रे वक़्त के राजा-रानी के क़िस्से आज सुनाये जाते हैं ? गुज़रे वक़्त पर ज़ोर दे कर ? तौबा करो। अमीरों के क़िस्से भी कभी गुज़रे वक़्त के हुए हैं ! हाँ, शायद ठीक कहते हो। बहुत होगा तो सफल पुरुष की जगह सफल स्त्री आ बैठेगी। वह भी शायद न हो। बाक़ी कहानी... अच्छा सुनिए।

हर राजा का, आप जानते है, एक मुँहलगा नाई होता है। और हर रानी की एक मालिशवाली। बदन लगी। अब जिसके हाथों रोज़ बदन सौंपोगे, (जब चाहे गर्दन दबा दे) उस पर भरोसा तो करना ही पड़ेगा।

वकील की बीवी भी करती है। वकील कहा क्या मैंने ? सफल पुरुष क्या वकील है ? चलो, मान लेते हैं। वकील, डॉक्टर, कंप्यूटर इंजीनियर, उद्योगकर्मी, नौकरशाह, सभी आजकल के राजा-महाराजा हैं। पढ़ाई ज़रूर करते हैं, राजा बनने के लिए, पर पढ़ाई करने का हक़, बाकायदा, पुश्तैनी है।